International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 04(I), October - December, 2022, pp. 221-224

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास व समायोजन का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

योगेश कुमार दीक्षित*
डॉ. देवेन्द्र लोढा**

प्रस्तावना

शिक्षा आदि काल से चली आने वाली एक निरन्तर प्रक्रिया है जो अन्धकार से निकाल कर प्रकाश की ओर ले जाती है। शिक्षा सभ्यता और संस्कृति की जननी है। संसार में जन्म लेने के बाद व्यक्ति परिवार, विद्यालय, प्रकृति, पशु–पक्षी तथा अन्य साधनों से शिक्षा ग्रहण करता है। शिक्षा ही बालक का चारित्रिक विकास, नैतिक विकास, नागरिकता के गुणों का विकास एवं शारीरिक तथा मानसिक विकास करती है। कुल मिलाकर शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वागींण विकास करती है। शिक्षा के अभाव में व्यक्ति पशु से समान है।

ड्रेवर[1] ने शिक्षा को संकुचित अर्थ में परिभाषित करते हुए लिखा है कि ''शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक के ज्ञान, चरित्र तथा व्यवहारों को एक निश्चित दिशा तथा रूप प्रदान किया जाता है।''

प्राणी जिस साधन के द्वारा ज्ञान उपार्जित करता है उसी का नाम शिक्षा है। शिक्षा शब्द का प्रयोग आदिकाल से होता रहा है। शिक्षा के द्वारा ही मानव समाज में रहने योग्य बन पाता है। शिक्षा मनुष्य के परिष्कार एवं विकास की प्रक्रिया है। जीवन के प्रत्येक अनुभव हमें कुछ ना कुछ सिखाते हैं, इसलिए अनुभव ही शिक्षा है। शिक्षा मन, बुद्धि एवं आत्मा का विकास है। शिक्षा शब्द ऐसे अक्षय–पात्र के समान है, जिसमें जो कुछ भी चाहे वही प्राप्त किया जा सकता है। मानव प्रकृति की एक अद्भुत रचना होने के साथ–साथ बौद्धिक प्राणी भी है। जिसने अपने अस्तित्त्व के लिए अथक् प्रयास किये हैं। मानव बौद्धिक प्रवृत्ति का होने के कारण वह आस–पास के वातावरण से सीखने का प्रयास करता है और सीखे गये ज्ञान को व्यवहार में लाने का प्रयास भी करता है। शिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वाली गतिशील प्रक्रिया है जो बालक के ज्ञान, कौशल एवं व्यवहार में परिवर्तन लाकर उसका विकास करती है अपने अनुभव व क्रियाशीलता से बालक शिक्षा ग्रहण करता है इस निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया के फलस्वरूप व्यक्ति अपना समायोजन चारों ओर के भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक वातावरण से करता है एवं जीवन का प्रत्येक अनुभव उसके ज्ञान में वृद्धि करता है। शिक्षा को सीमाओं में नही बांधा जा सकता है यह व्यक्ति की जन्मजात शक्तियों का इस प्रकार विकास करती है कि उसका सामाजिक अनुकूलन होने के साथ–साथ वैयक्तिक विकास भी हो सके। यह व्यक्ति के ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्तियों के विकास से व्यवहार में परिवर्तन लाती है।

शिक्षा सदैव ही विकास व सामाजिक परिवर्तन का माध्यम रही है, यह मानव जीवन के विकास का प्रबल साधन है इसका मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के अन्दर शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक बुद्धी व परिपक्वता ले आना है। शिक्षा से व्यक्ति में आत्मविश्वास बढ़ता है जिससे व्यक्ति अपने जीवन में सफलता की ओर अग्रसर होता है।

* शोध छात्र, शिक्षा संकाय, लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, चिकानी, अलवर, राजस्थान।
** निर्देशक, शिक्षा विभाग, लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, चिकानी, अलवर, राजस्थान।

[1] सिंह रामपाल एवं सिंह उमा(2007) शिक्षा तथा उदीयमान भारतीय समाज, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा। पृ 2

आत्मविश्वास

आत्मविश्वास व्यक्ति का किसी कार्य को पूरा करने के लिए उसकी आंतरिक शक्तियों योग्यताओं एवं उत्साह पर आधारित विश्वास की मात्रा को कहा जा सकता है। आत्मविश्वास के द्वारा ही आत्म प्रकाशन किया जा सकता है आत्म प्रकाशन आत्मविश्वास में सहायक होता है। आत्मविश्वास सफल जीवन की एक महत्वपूर्ण युक्ति है। यह एक ऐसी युक्ति है जिसके अभाव में व्यक्ति का अन्य हिस्सा क्रियाशील होते हुए भी ऊर्जाहीन होती है अर्थात् व्यक्ति में उत्साह और वेग का जो आधार है वह है आत्मविश्वास। व्यक्तित्व के एक महत्वपूर्ण शील युग के रूप में यह व्यक्ति में परिस्थितिनुकूल पनपता है। अतः व्यक्तित्व की सम्पूर्णता में आत्मविश्वास आवश्यक ही नहीं अपरिहार्य है। इसके अभाव में व्यक्ति किसी भी अपने कार्य में सम्भवतः सफलता की ओर अग्रसर नहीं हो सकता। विद्यार्थी के जीवन में आत्मविश्वास सफलता की एक महत्वपूर्ण कुंजी का कार्य करता है कई बार ऐसा होता है कि शारीरिक रूप से कोई विद्यार्थी स्वस्थ होता है मानसिक रूप से उससे भी शक्तिशाली है परंतु आप विश्वास की कमी के कारण वह अपनी शक्तियों का लाभ नहीं उठा पाता है क्योंकि किसी विद्यार्थी की अपनी शक्तियां इतनी प्रबल नहीं होती जितनी प्रबल आत्मविश्वास की शक्ति होती है। एक कमजोर शरीर से निर्मल या अपंग विद्यार्थी भी आत्मविश्वास की शक्ति के सहारे बहुत ऊंचाइयों तक पहुंच जाता है। विश्वास की शक्ति ही विद्यार्थी के द्वारा बड़े–बड़े कार्य करा देती है। ऐसे कार्य जो असंभव प्रतीत होते हैं देखने में जो विद्यार्थी अक्षर मामूली लगते हैं और उन्हें अयोग्य समझा जाता है वह कभी–कभी अपने से अधिक जो भी समझे जाने वाली विद्यार्थियों से भी बड़े और चकित कर देने वाले कार्य कर दिखाते हैं। ईश्वर ने प्रत्येक विद्यार्थी को स्वास्थ्य, बुद्धि, शक्ति एवं साधन संपन्न शरीर दिया है। विद्यार्थी अनेक ऐसा कार्य कर सकता है जो असंभव लगते हैं यह आत्मविश्वास की शक्ति से ही हो सकता है।

आत्मविश्वास से आशय स्वयं पर विश्वास एवं नियंत्रण से है अर्थात् अपनी शक्ति और योग्यता पर विश्वास। सामान्य अर्थ में आत्मविश्वास का अर्थ है अपने आप पर विश्वास, अपनी आत्मा पर भरोसा। आत्मविश्वास एक ऐसा आन्तरित गुण है जो शिक्षण और प्रशिक्षण द्वारा विकसित होता है।

"आत्मविश्वास का पौधा मन के धरातल में धैर्य संयम एवं चिन्तन के खाद–पानी से विकसित होता है यह मेहनत का दायां हाथ है क्योंकि हम चाहे, कितनी ही मेहनत करे यदि हमारे अन्दर आत्मविश्वास की कमी है तो मेहनत का रंग फीका पड़ जाता है। जब आत्म–विश्वास का सूर्य उदित होता है तो डर, संकोच, लोभ, तृष्णा जैसे विकार स्वतः ही दूर हो जातें हैं। आत्मविश्वासी व्यक्ति स्वाभिमानी एवं संयमी होता है। जीवन में सफल होने के लिए व्यक्ति के अन्दर अपने फैसले करने की क्षमता, तथा परिस्थितियों का सामना करने का साहस ही आत्मविश्वास का प्रतिरूप है। जब आत्मविश्वास का दीप जलता है तो चारों तरफ प्रकाश ही प्रकाश नजर आता है अज्ञानता का तिमिर छँट जाता है।"

स्वेट मॉर्डेन का मानना है कि ''आत्मविश्वास का शाब्दिक अर्थ है स्वयं में विश्वास। यह विश्वास है कि मैं समर्थ हूँ। यह विश्वास है कि मैं शक्तिशाली हूँ। यह विश्वास है कि मैं कुछ कर सकता हूँ, यही आत्मविश्वास है।''

समायोजन

समायोजन का अर्थ भलीभांति व्यवस्था करना या अच्छी तरह से स्वयं को परिस्थितियों के अनुकूल बनाना है, जिससे व्यक्ति की आवश्यकता पूर्ण हो जाए। अतः कह सकते हैं कि निःसंदेह समायोजन की अवधारणा संतुलन पर निर्भर है यह संतुलन दैहिक, जैविक, जैवरासायनिक, सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक आदि रूप में हो सकता है। अच्छे व उचित समायोजन हेतु व्यक्ति में सहनशीलता, आत्मविश्वास, सांवेगिक स्थिरता, सही निर्णय लेने की क्षमता, आत्मसम्मान का भाव, आत्ममूल्यांकन की क्षमता, दृढ़ इच्छा शक्ति इत्यादि का होना आवश्यक है।

व्यक्ति अपने जीवन के प्रत्येक स्तर पर समायोजन स्थापित करता है परन्तु समायोजन की अत्यधिक आवश्यकता किशोरावस्था में होती है इसमें बालक स्वयं को सभी परिस्थितियों में समायोजित करने में व्यस्त रहने लगता है समायोजन जीवन की अत्यावश्यक प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत बालक अपने व्यवहार में इस प्रकार से

परिवर्तन लाता है कि वह अपने तथा वातावरण के बीच बेहतर समन्वय स्थापित कर सकें। यह समन्वय वह अपने आत्मविश्वास से करता है। बालक का आत्मविश्वास जितना उच्च स्तर का होगा बालक उतनी ही अच्छी तरह से विभिन्न परिस्थितियों से समायोजन स्थापित कर सकेगा।

सभी मनोवैज्ञानिक पहलू बालक के दैनिक जीवन को प्रभावित करते हैं इसी कारण से किशोरावस्था में अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती है। विद्यार्थी स्तर पर यह समस्याएँ शैक्षिक उपलब्धियों को प्रभावित करती है। विद्यार्थी स्तर पर यह समस्याएँ शैक्षिक उपलब्धियों को प्रभावित करती है। इस आधार पर विद्यार्थी सभी परिस्थितियों से सुसमायोजित होकर अपनी शैक्षिक उपलब्धियों को बढ़ा सकते हैं। परन्तु विभिन्न योग्यता के बालक का समायोजन स्तर भी भिन्न–भिन्न होता है। अच्छा समायोजन बालक की शैक्षिक उपलब्धि उच्च रखता है एवं संवेगात्मक रूप से समायोजित बालक को अपनी योग्यताओं, क्षमताओं तथा कमजोरियों का भलीभांति ज्ञान होता है। ऐसे बालक में बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार अपने आपको बदलने की पूरी योग्यता होगी।

शैक्षिक उपलब्धि

किसी कार्य को सफलता पूर्वक प्राप्त करने को सामान्य रूप से उपलब्धि कहा जाता है। शैक्षिक उपलब्धि वह है जिसके द्वारा विद्यार्थी अपनी सम्पूर्ण योग्यता एवं आन्तरिक क्षमता के अनुसार अपने ज्ञान को अव्यिक्त करता है उपलब्धि प्राप्त करता है। शिक्षा के क्षेत्र में सफलता भी शैक्षिक उपलब्धि के अन्तर्गत आता है।

शैक्षिक उपलब्धि शब्द का उपयोग प्रायः विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में किया जाता है। प्रत्येक विद्यार्थी अपनी औपचारिक शिक्षा के दौरान कई परीक्षएँ देता है। उन पीरक्षाओं के परिणाम ही यह दर्शाते हैं कि उनमे उपलब्धि की मात्रा कितनी है।

सी. वी. गुड : ''शैक्षणिक उपलब्धि द्वारा हमें यह पता चलता है कि विद्यार्थी क्या और कितना सीख चुका है तथा वह किसी कार्य को कितना अच्छी तरह से कर सकता है।'' शैक्षणिक उपलब्धि हमें यह बताती है कि एक छात्र शिक्षा के क्षेत्र में कितना व्यावहारिक ज्ञान उपलब्ध कर चुका है।

अध्ययन का औचित्य

शिक्षा ऐसी प्रक्रिया है जो विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विशेषताओं, योग्यताओं और रूचियों को ध्यान में रखकर उनका विकास और व्यक्तित्व निर्माण करती है। शिक्षा आत्मनिर्भर तथा आत्मविश्वासी नागरिक बनाने में सहायता प्रदान करती है। शिक्षा संकट के समय में सफलता प्राप्त करने की क्षमता विकसित करती है तथा समायोजन में सहायता करती है।

प्रायः यह देखा जाता है कि प्रत्येक क्षेत्र में सफल होने के लिए युवाओं में आत्मविश्वास का गुण होना चाहिए। चाहे खेल हो, शिक्षा हो या अर्न्तवैयक्तिक सम्बन्ध हों। निम्न आत्मविश्वास अपर्याप्त सामाजिक कौशल से सम्बन्धित है। जिन व्यक्तियों का आत्म विश्वास कम होता है उनका सामाजिक विकास उचित प्रकार नहीं हो पाता है तथा उन्हें असफलता का सामना करना पड़ता है। वास्तव में देखा जाये तो बालक का सामाजिक विकास उसकी सांवेगिक बुद्धि पर निर्भर करता है। क्योंकि सांवेगिक बुद्धि बालक को अपने संवेगों तथा दूसरों के संवेगों को समझने में सहायता करती है। उसी के आधार पर वह समायोजन सीखता है। बालक में आत्मविश्वास हो तो वह हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। आत्मविश्वास के बल पर ही वह अपने लक्ष्य को पाने की ओर अग्रसर होता है। यदि किशोर आत्मविश्वास से ओत–प्रोत होगा तो यह न केवल उसकी व्यक्तिगत उपलब्धि को लाभ पहुँचाएगा बल्कि देश का भविष्य भी समृद्ध तथा उज्जवल हो सकेगा। आत्मविश्वास को विद्यार्थियों के अधिगम व उपलब्धियों को प्रभावित करने वाले एक मुख्य घटक के रूप में देखा जा सकता है। अकारण चिंता, अत्यधिक भारी तनाव, असुरक्षा की भावना जैसी नकारात्मक प्रवृतियों के कारण विद्यार्थी अपने अध्ययन पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते हैं तथा कक्षा–कक्ष में स्थाई ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाते हैं जिससे उनका अधिगम प्रभावित होता है।

उच्च स्तर विद्यार्थियों के भविष्य निर्माण का वह समय है जब विद्यार्थी अपने भावी व्यवसाय के चुनाव के आधार पर तथा अपनी रुचियों, योग्यताओं, क्षमताओं तथा जरुरतों के अनुसार विषय संकाय व व्यवसाय का

चुनाव करते हैं। कला वर्ग व विज्ञान वर्ग की अपनी अलग–अलग प्रकृति है। जहाँ कला वर्ग रचनात्मक प्रकृति का है वहीं विज्ञान वर्ग में विषय वस्तु का क्रमबद्ध रूप से अध्ययन किया जाता है। इन दोनों वर्गों की अपनी अलग प्रकृति के साथ ही इनमें अध्ययनरत विद्यार्थियों का स्वभाव, काम करने के तरीके, अभिव्यक्ति, रुचि, आकांक्षा स्तर, आत्मविश्वास तथा समायोजन में विभिन्नता पाई जाती है। अतः विषयों की प्रकृति के संदर्भ में विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना भी आवश्यक प्रतीत होता है।

शैक्षिक उपलब्धि किसी एक कारक से नहीं बल्कि अनेक कारकों से प्रभावित होती है। आत्मविश्वास व समायेजन भी शैक्षिक उपलब्धि को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करते हैं। आत्मविश्वास किन्हीं भी परिस्थितियों के साथ सामंजस्य स्थापित करने में सहायक होता है। आत्मविश्वास शैक्षिक उपलब्धि की आधार शिला है। आत्मविश्वास, विषय सम्बन्धी अधिगम व सहगामी क्रियाओं में विद्यार्थियों की सहभागिता को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख कारक होने के साथ–साथ शैक्षिक उपलब्धि को सबसे अधिक प्रभावित करने वाला कारक है तथा शैक्षिक उपलब्धि को अनुकूलतम स्तर तक अर्जित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. त्यागी, जी.एस.डी. तथा पाठक, पी.डी., (2006) : "शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
2. पाण्डेय, आर.एस., (2007): उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
3. पाठक,पी.ड़ी. (2007):''शिक्षा मनोविज्ञान'' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा ।
4. भार्गव, उर्मिला एवं भार्गव, उषा, (2006) शिक्षा सिद्धान्त व शिक्षण कला, राखी प्रकाशन, आगरा,
5. भार्गव, महेश (2007) आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण व मापन' एच.पी. भार्गव बुक हाउस आगरा ।
6. लाल, रमन बिहारी एवं तोमर, गजेन्द्र सिंह, (2014)शिक्षा के दार्शनिक आधार, आर लाल बुक डिपो, मेरठ,,
7. सक्सेना, एन.आर.एस. तथा अन्य, (2006) : शिक्षा के दार्शनिक व समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
8. एस.एस. माथुर (2008); एड्यूकेशन साइकोलॉजी, विनोद पुस्तक मन्दिर, रांगेय राघव मार्ग, आगरा
9. सिंह, रामपाल एवं सिंह उमा (2007) शिक्षा तथा उदीयमान भारतीय समाज, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
10. सिंह, डॉ गया (2012)अधिगम कर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।
11. श्रीवास्तव, डी.एन., वर्मा प्रीति (2014) बाल मनोविज्ञानः बाल विकास, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

❖◆❖